



Hargharpanditji
ॐ
॥ श्री गंगा चालीसा ॥
॥ ॐ जय गंगे माता ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री गंगा चालीसा ॥

॥ दोहा ॥

जय जय जय जग पावनी, जयति देवसरि गंग।
जय शिव-जटा निवासिनी, अनुपम तुंग तरंग॥
जय जय जननि हरण अघ-खानी।
आनंदकरिणी गंगा भवानी॥

॥ चौपाई ॥

जय गिरिराज किशोरी माता।
महिमा अमित न जाय बखाना॥
विष्णुपदोद्भव सुरसरि प्यारी।
शिव जटामुकुट विराजत न्यारी॥

भागीरथ तप सफल तुम्हारा।
भूलोक आई किया उद्धारा॥
पाप ताप सब हरनिहारी।
त्रिभुवन तारिणी मंगलकारी॥

हर-हर गंगे नाम तुम्हारा।
सुमिरत मिटे भवसागर धारा॥
पतित-पावनी पुण्यप्रदायिनी।
सकल लोक हित सुखदायिनी॥

ऋषि-मुनि-देव करें नित सेवा।
गुण गावत पावें सुख मेवा॥
शीतल, निर्मल, अमृतधारा।
करो कृपा जन पर अपारा॥

जो जन श्रद्धा सहित नहावै।
जन्म-जन्म के पाप नसावै॥
तव जल पीकर मन हरषाई।
तन-मन पावन शांति समाई॥

तीर्थराज सब तुममें वास।
करो भक्त का सदा विकास॥
काशी, प्रयाग, हरिद्वारा।
महिमा गावत जग संसारा॥

ऋद्धि-सिद्धि की दात्री माता।
भक्तन की तुम भाग्य-विधाता॥
दीन-दुखी पर दया तुम्हारी।
करो कृपा जननी हितकारी॥

संकट हरणी मंगलकारी।
भव भय हरणी सुख विस्तारि॥
जो नित पाठ करे मन लाई।
माँ गंगा की कृपा वह पाई॥

रोग-दोष सब दूर भगावै।
सुख-समृद्धि घर में आवै॥
संतति, धन, यश, सुख बढ़ावै।
अंत समय हरिधाम पठावै॥

भक्तजनों की लाज बचावो।
अपने चरणन में बसावो॥
करुणामयी जग की हितकारी।
जय-जय-जय गंगे सुखकारी॥

॥ दोहा ॥

माता गंगे कृपा करो, हरो सकल संताप।
चरण शरण जो आ गए, काटो भव के पाप॥
जो यह चालीसा पढ़े, श्रद्धा सहित मन लाय।
गंगा माता कृपा करें, मनवांछित फल पाय॥

